मगरमच्छ प्रजनन केंद्र

पिपली चिड़ियाघर

राष्ट्रीय राजमार्ग 44 के किनारे, पवित्र शहर कुरुक्षेत्र से मात्र 10 किमी दूर स्थित पिपली चिड़ियाघर एक छोटा परंतु महत्वपूर्ण वन्यजीव पार्क है, जिसका प्रबंधन हरियाणा वन एवं वन्यजीव विभाग द्वारा किया जाता है। यह स्थल चंडीगढ़ (90 किमी) और दिल्ली (160 किमी) से भी आसानी से पहुंच योग्य है, जिससे यह परिवारों, पर्यटकों और वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनता है।

पिपली चिड़ियाघर वन्यजीव शिक्षा, जागरूकता और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह छोटा सा क्षेत्र कई प्रकार के जानवरों को आश्रय देता है, जिनमें एशियाई शेर, तेंदुआ, काला हिरण, नीलगाय, लकड़बग्घा, साही और विभिन्न पक्षी शामिल हैं, जो भारत के मूल वन्यजीवों को नजदीक से देखने का अवसर प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र हरियाणा के लिए एक हरा फेफड़ा भी है और जैव विविधता को बढ़ावा देकर पारिस्थितिक संतुलन में योगदान देता है।

इतिहास और संस्कृति से भरपूर कुरुक्षेत्र के पास स्थित यह चिड़ियाघर न केवल एक मनोरंजन स्थल है, बल्कि प्रकृति के प्रति जागरूकता का एक प्रवेश द्वार भी है।

design by conceptzandbeyond.com

WILDLIFE DEPARTMENT HARYANA

वन्यजीव एवं संरक्षण आरक्षित क्षेत्र
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

कुरुक्षेत्र

इतिहास और पौराणिकता से समृद्ध कुरुक्षेत्र क्षेत्र कई महत्वपूर्ण वन्यजीव आवासों और संरक्षण क्षेत्रों का घर भी है, जो वनस्पति और जीव-जंतुओं की आश्चर्यजनक विविधता को दर्शाते हैं। ये स्थल संरक्षण प्रयासों में अहम भूमिका निभाते हैं और प्रकृति प्रेमियों व पक्षी दर्शकों के लिए अनोखे अनुभव प्रदान करते हैं।

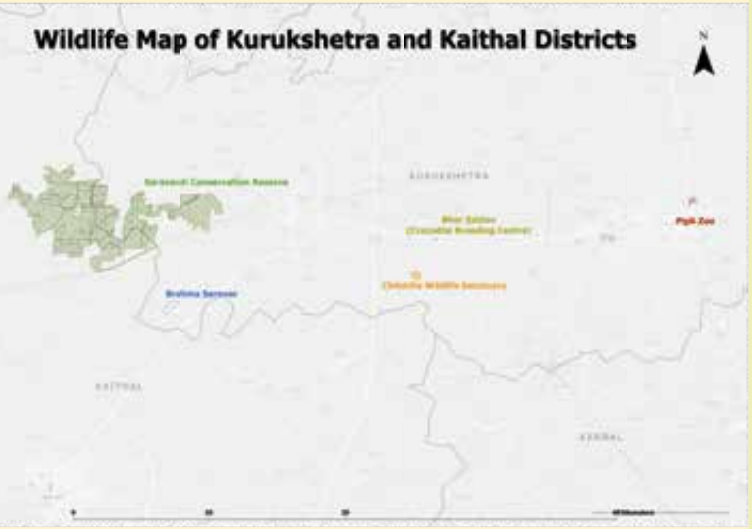

छिल्लछिल्ला वन्यजीव अभयारण्य

कुरुक्षेत्र जिले में स्थित छिल्लछिल्ला वन्यजीव अभयारण्य, जिसे छिल्लछिल्ला झील के नाम से भी जाना जाता है, स्थायी और प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण आश्रय स्थल है। वर्ष 1986 में वन्यजीव अभयारण्य के रूप में अधिसूचित यह 22 हेक्टेयर का आर्द्रभूमि क्षेत्र कई संकटग्रस्त और निकट संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए एक प्रमुख विश्राम स्थल है। यह कुरुक्षेत्र शहर से 22 किमी और पिहोवा शहर से 14 किमी की दूरी पर स्थित है।

इस अभयारण्य की विविध पारिस्थितिकी—झील, दलदली क्षेत्र और आसपास की वनस्पति—वन्यजीवों और पौधों की समृद्ध विविधता का समर्थन करती है। सर्दियों के महीनों में यह स्थल नॉर्दर्न शवलर और कॉमन कूट जैसे प्रवासी बतखों, हंसों और जल पक्षियों से भर जाता है। यह Painted Stork और सारस क्रेन जैसे दुर्लभ स्थानीय पक्षियों के लिए प्रजनन स्थल भी है। पीपल, बरगद और कीकर जैसे वृक्षों की भरमार के साथ छिल्लछिल्ला पक्षी प्रेमियों और प्रकृति के प्रशंसकों के लिए एक शांतिपूर्ण और जैवविविधता से भरपूर स्थल है।

सरस्वती संरक्षण आरक्षित क्षेत्र

सरस्वती संरक्षण आरक्षित क्षेत्र, जिसे स्योंसर वन भी कहा जाता है, हरियाणा के कैथल जिले में स्थित 4,452.85 हेक्टेयर का विस्तृत क्षेत्र है। यह राज्य का तीसरा सबसे बड़ा वन क्षेत्र है और पारिस्थितिकीय व सांस्कृतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे वर्ष 2007 में आधिकारिक रूप से संरक्षण आरक्षित घोषित किया गया था, और यह वन्यजीव संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन के लिए समर्पित है।

यह आरक्षित क्षेत्र विभिन्न वन्यजीवों का आश्रय स्थल है, जैसे कि हॉग डियर, चीतल, जंगली सूअर, नीलगाय, उल्लू, बंदर और सांप। पक्षी प्रेमियों को यहां उल्लुओं सहित कई स्थायी पक्षियों की विविधता देखने को मिलती है। इस आरक्षित क्षेत्र की महत्ता सरस्वती नदी की पौराणिक धारा और पुरातात्विक अवशेषों से जुड़ी हुई है। यह पर्यावरणीय शिक्षा और शोध में भी एक अहम भूमिका निभाता है, और हरियाणा की समृद्ध जैव विविधता और ऐतिहासिक विरासत को जानने के लिए प्रकृति प्रेमियों के लिए आदर्श स्थल है।

ब्रह्म सरोवर समुदाय आरक्षित क्षेत्र

19 जुलाई 2017 को समुदाय आरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया ब्रह्म सरोवर समुदाय आरक्षित क्षेत्र, कुरुक्षेत्र के पिहोवा तहसील के थाना गांव में 89.368 एकड़ में फैला है। यह क्षेत्र अपने पारिस्थितिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है और कछुओं का प्रमुख आश्रय स्थल होने के साथ-साथ 120 से अधिक प्रवासी पक्षियों की शीतकालीन शरणस्थली है, जिनमें कॉमन शेलडक, रेड क्रेस्टेड पॉचर्ड, वूली नेक्ड स्टॉर्क और लेसर व्हिस्लिंग डक शामिल हैं।

पवित्र 48 कोस परिक्रमा के अंतर्गत आने वाला यह स्थल वही माना जाता है जहां भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया था। पुरातात्विक खोजें इस बात की पुष्टि करती हैं कि यह स्थल प्राचीन ग्रंथों में वर्णित मूल ब्रह्म सरोवर है।

इस क्षेत्र में खेजड़ी और जल जैसे दुर्लभ वृक्ष भी पाए जाते हैं और स्थानीय लोगों की आस्था है कि यहां का जल औषधीय गुणों से युक्त है। जैव विविधता, विरासत और श्रद्धा का अनूठा संगम यह स्थल तीर्थयात्रियों, पक्षी प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है।

मगरमच्छ प्रजनन केंद्र

भोर सैदां गांव में स्थित Bhor Saidan Crocodile Farm, कुरुक्षेत्र से मात्र 22 किलोमीटर की दूरी पर एक प्राचीन पुरातात्विक टीले पर स्थित है, जिसे कभी पौराणिक सरस्वती नदी के तट पर माना जाता था। इस क्षेत्र में मगरमच्छों की उपस्थिति को काफी पुरानी माना जाता है। एक लोकप्रिय मान्यता के अनुसार, पास के भूरीश्वर मंदिर के एक पुजारी ने 1930 के दशक में मगरमच्छ के दो बच्चों को लाकर मंदिर के तालाब में छोड़ा था। इस घटना ने पवित्र जल, मंदिर और मगरमच्छों की उपस्थिति के बीच एक आध्यात्मिक संबंध स्थापित किया। इसी आधार पर हरियाणा वन विभाग ने 1982 में आधुनिक मगरमच्छ प्रजनन केंद्र की स्थापना की। तब से इस केंद्र ने सफलतापूर्वक प्रजनन कार्यक्रम चलाया है, जिससे यहां मगरमच्छों की संख्या बढ़कर 43 हो गई है। आगंतुक यहां इन अद्भुत सरीसृपों को लगभग प्राकृतिक वातावरण में देख सकते हैं।